आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 03 | उदयपुर शनिवार 15 फरवरी 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

विश्व की श्रेष्ठतम लोककथा

हिन्दुस्तानियों के पास लोक की जितनी जो विविध संपदा, साहित्य, संस्कृति के सेतु और जीवनधर्मिता के आचरण उजास मिलते हैं उससे हम बहुत अनजान हैं। मेरी दृष्टि में विदेशी लोगों ने इसे अधिक पहचाना, अध्ययन का विषय बनाया और अच्छा कार्य कर दिखाया। यह अलग बात है कि खजानों की पहली खोज हमारी रही और हम ही ने उसे जगजाहिर कर सबको इसकी जानकारी तथा अतापता दिया।

मेरे अपने ही अनुभव में राजस्थान की पड़ कला, कावड़ कला पर विस्तृत कार्य करने के लिए मैंने डॉ. स्मिथ तथा जो मिलर को पड़ कला के चितेर श्रीलाल जोशी और पड़ वाचक भोपे-भोपियों से मिलाया। लासण-जूण पर 'रंगायन' में टीप लिखने पर विदेशी अनुसंधित्सुओं ने भारत आकर खोजबीन की।

सांप-सीढ़ी के खेल पर धर्मयुग में लिखने के उपरान्त डेनमार्क के जेकब स्मीट मडसेन ने अपनी पीएच.डी. का विषय बना देश के कई प्रांतों की यात्राएं कीं। लगभग 13वीं शताब्दी में भारत में ही इस खेल का सूत्रपात हुआ।

राजस्थान की कठपुतलियां और उनके कलाकारों को हम उचित संरक्षण नहीं दे सके पर 1965 में रूमानिया के अंतर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में जो पुतली खेल प्रदर्शित किया गया उसकी प्रस्तुति हमारे ही कलामंडल के कलाकारों ने दी।

कावड़ के साथ मोलेला की माटी की देवी-देवताओं की प्रतिमाएं भी कई विदेशी संग्रहालयों की रौनक बनी हुई हैं। कावड़ निर्माता बसी के कलाकार मांगीलाल मिस्त्री ने परंपरा की टेक रखते हुए कई नये प्रयोग किए, वहीं मूर्ति निर्माता मोहनजी कुम्हार की सब ओर तूती बोली। भारत सरकार ने भी श्रीलालजी, मोहनजी को पद्मश्री से नवाज कर यथेष्ट सम्मान किया। भीलों में प्रचलित गवरी को मैंने पहले पहल शोध विषय बना डाक्टरेट की उपाधि ली। बाद में देश-विदेश में इसकी गूंज देख मैं बड़ा चकित हुआ। रेगिस्तान के खड़ताल वादक सिद्दीक की हमने पहचान कराई तब वे पद्मश्री भी बने। मारवाड़ी खिलाड़ी उगमराज को मध्यप्रदेश सरकार ने पुरस्कृत किया।

लोककथाओं की ही बात करें तो वे असीम हैं। सृष्टि के उद्भव से लेकर उनके रचाव, बनाव, प्रकृति, पुरूष और जितने भी रहस्य-चमत्कार-कौतुक हैं उनसे जुड़ी लोककथाएं बड़ी जानकारी देती हैं। राजस्थान में सर्वाधिक संकलन, संग्रह, प्रकाशन इन कथाओं को लेकर हुआ है। और तो और यहां हजारों की संख्या में जो कहावतें प्रचलित हैं उनके पीछे भी कथाओं का समंदर ठाठे मारता दृष्टिगत होता है।

प्रकाशित संकलन इसके गवाह हैं। मेरा कार्य इस क्षेत्र में मुख्यत: त्यौहार, उत्सव तथा व्रत, अनुष्ठान से जुड़ी कथाओं के अध्ययन, संकलन का रहा। बालिकाओं में प्रचलित सांझी उत्सव, महिलाओं में प्रचलित बारह महीनों के व्रतानुष्ठान तथा उनसे जुड़े थापांकन, होली के बाद दस दिनों के अगता में दशामाता से जुड़ी व्रत कथाएं तथा पूरे माह कार्तिक नहाती महिलाओं में प्रचलित कथाओं पर किया गया कार्य मुझे कई दृष्टियों से संतोष-धनी बना गया।

दशामाता पर मेरी आत्मजा कविता ने एक सौ कहानियां संकलित कीं वहीं सांझी पर उसकी छोटी बहिन कहानी ने शोध की। दोनों ने पीएच.डी. के शोधप्रबंध लिखे जो प्रकाशित हुए।

इस अध्ययन, अनुसंधान ने ही संभवत: आयरलैंड की शोध छात्रा को किसी ने जानकारी दी होगी जिसके सहारे वह एक दिन उदयपुर आई जब मैं कलामंडल में निदेशक था। दिन को एक बजे करीब उसने अचानक मेरे कक्ष में प्रवेश किया।

आते ही अपना आशय प्रकट करते हुए बताया कि उसने लगभग आधी दुनियां की सफर कर ली है। वह दुनिया की सर्वश्रेष्ठ लोककथा का अध्ययन करने निकली है। उसे एक ऐसी कथा की खोज है जो बहुत बड़ी न हो तथा उसकी विषयवस्तु विश्व मानव से संदर्भ रखती हो।

उसकी बात सुनकर मैंने कहा कि आप हड़बड़ाहट में लगती हैं। कुर्सी पर बैठने का इशारा करते हुए भी आपने अपनी बैठक नहीं पकड़ी और अब इतनी फटाफट में मेरी परीक्षा ले रही हो। तनिक भी सोचने-समझने का समय नहीं देकर पुन: यहां से गमन की बात कह मुझे पेशोपेश में डाल दिया है। वह मुस्कराती रही। मन में यह भी रहा कि शोध के कार्य ऐसे भी होते हैं।

उपलब्धि प्राप्त करने के लिए अधिक प्रतीक्षा तथा चाख-चाख करना उचित भी नहीं होता। मैंने मन ही मन देवता का स्मरण किया। वह हर जरूरतमंद के साथ होकर रक्षा करता है। इसे अप्रत्याशित घटना ही कही जानी चाहिए जब मेरे मन में दशामाता के दिनों में कही जाने वाली शताधिक कहानियों में से एक सूरजनारायण, सूर्य भगवान से संबंधित कथा ने बिजली प्राकट्य सी दस्तक दी। मैंने उस छात्रा को, टूटीफूटी अंग्रेजी का अट्यावण देते हुए हिन्दी में वह संपूर्ण कहानी सुना दी।

यह कहानी सुन वह उछल पड़ी। चेहरे पर पूट की हंसी बिखेरते, अपनी भुजाओं को फैलाती बोली- ऐसी सुंदर, जानकारीपरक सृष्टि-सौंदर्य की कथा मैंने कहीं नहीं सुनीं। मेरा मिशन यहां आकर पूरा हुआ। आपको बहुत-बहुत धन्यवाद, आभार। वह सरल किंतु सरस अंग्रजी में अपनी भावना व्यक्त कर गई। मुझे लगा कि वह हिन्दी भी जानती है किंतु बोलने में संकोच करती है, जैसे मैं भी अंग्रेजी तो समझता हूं पर बोलने का अभ्यास आजादी प्राप्ति के समय से ही अनुत्साहित हो गया।

जो भी हो, पाठकों की जानकारी के लिए वह कहानी इस प्रकार है-

सूरज प्रतिदिन दुनिया को जगाने जाते। एक दिन उनकी पत्नी रानादे ने उनसे कहा कि प्रतिदिन ही सुबह आप घर से निकल जाते हैं, आज थोड़ी देर बैठो तो कुछ मन की बातें करें। सूरजनारायण बोले- रानादे मुझे जाने दो, कीड़ी को कण और हाथी को मण खाने को देना है। रानादे बोली- क्या आप सभी को खाने को देते हो? कोई भूखा नहीं बचता? सूरजनारायण ने कहा- जहां तक मेरी जानकारी है कोई वंचित नहीं रहता है।

सूरजनारायण ने स्नान-ध्यान किया। तिलक लगाया, चावल चढ़ाया और चलते बने। जाते-जाते रानादे के हाथ में रखी एक डिबिया में चावल गिरा दिया जिसमें एक चींटी बंद की जा रही थी। रानादे को इसका पता नहीं था।

संध्या को जब सूरज घर लौटे तो रानादे ने पूछा- किसी को भूले तो नहीं? कीड़ी को कण और हाथी को मण दे आए? सूरजनारायण के हां कहते ही रानादे ने चींटी रखी डिबिया खोली तो चींटी चावल लिए घूम रही थी जिसे देख बड़ा अचरज हुआ।

दूसरा दिन हुआ। सूरजनारायण ने जाते समय अपनी माता से कहा- मैं जा रहा हूं। पीछे से कोई आए तो उसे आश देना, निराशकर मत लौटाना। उनके जाते ही थोड़ी देर बाद स्वयं सूरजनारायण कोढ़ी का रूप धर कर आये और भिक्षा मांगने लगे- मां मुझे रोटी दो। मेरे मुंह में छाले हो रहे हैं इसलिए ठंडी रोटी मत देना। मेरा मन बत्तीस प्रकार का भोजन और तैंतीस प्रकार की तरकारियां खाने को लालायित है। मुझे गरम-गरम भोजन करा दो।

मां बोली- तू कोढ़ से इतना जर्जर हो रहा है। फिर खाने के लिए इतना चटोकड़ापन क्यों रखता है? कोढ़ी बोला-मां तुम्हें श्राप दूंगा। मां यह सुनते ही डर गई। उसने बहू से तुरत फुरत भोजन की व्यवस्था कराई। भोजन तैयार हो गया तो कोढ़ी ने कहा- मैं सूरजनारायण की थाल में जीमूंगा। रानादे ने अपनी सास से यह बात कही तो सास ने कहा- वह तो जिद्दी है। अपनी जिद्द पर डटा रहेगा, नहीं तो श्राप देकर चला जाएगा। उसे उसी थाल में भोजन कराकर थाल को फिर साफ कर लेना।

थाल में भोजन परोसा गया तो कोढ़ी बोला- मैं सूरजनारायण के महल में भोजन करूंगा। उसे महल में ले गए तो कह बैठा कि रानादे भोजन कराये तो ही भोजन करूंगा। ज्योंही रानादे उसे जीमाने लगी, त्योंही उसने सैंस किरण रूप धारण किया और दर्शन दिये। रानादे अचम्भे में पड़ गई। बोली- भगवान आपने मेरे साथ छल किया।

सूरज बोले- तुमने भी तो मेरे पर ऐसी ही बिताई। रातभर दोनों साथ रहे। इधर सूरजनारायण की माता बड़ी परेशान हुई। बहू को कोढ़ी के साथ बैठा हुआ देखकर बाहर बेचैन हो भटकती रही। गालियां देती कहती रही- आने दे सूरज को, तुझे घाणी में पिलाऊंगी। शर्म नहीं आती जो कोढ़ले के साथ भीतर बैठी हुई है! उसे क्या मालूम कि वह कोढ़ी उसी का पुत्र सूरज है जिसने अपनी यह कला दिखाई है।

सुबह हुई। सूरजनारायण जाने लगे तो रानादे बोली- कोई न कोई ऐसा उपाय कर जाओ जिससे मां को शांति मिले। नहीं तो मेरा जीना मुश्किल हो जाएगा। सूरजनारायण ने एक अंगूठी देने को कहा तो रानादे बोली कि अंगूठी तो उनके पास भी है, तब सैंस किरण में से एक किरण उन्होंने ढोलिये के नीचे छिपा दी और प्रस्थान कर गये। रानादे ने जाकर अपनी सास के चरण छुए। चरण छूते ही सास बड़बड़ाने लगी।

रानादे ने कहा कि वे तो आपके सुपुत्र ही थे। उन्हें ले जाकर ढोलिये के नीचे छिपी किरण बताई परन्तु इस पर भी सास शांत नहीं हुई। उसका गुस्सा बढ़ता गया। सूरजनारायण पर बड़ी क्रुद्ध हुई और अपने हाथ में छड़ी लिए उसकी सभा में जा पहुंची।

- शेष पृष्ठ सात पर

पोथीखाना

तेरापंथ धर्मसंघ का इनसाइक्लोपीडिया

तेरापंथ धर्मसंघ का सौभाग्य कहिये कि मेवाड़ का अहोभाग्य ; यहां तेरापंथ जैसे जैन धर्म का अभ्युदय हुआ। राजसमन्द जिले के केलवा गांव की अंधेरी ओवरी में आचार्य भिचु स्वामी ने इसका सूत्रपात किया। इसी क्रम में उन्होंने वहां वि. सं. 1817 का चातुर्मास किया था।

मेवाड़ भूमि शक्ति और भक्ति की अपराजेय भूमि कही जाती है। शक्ति और भक्ति दोनों का चोली दामन सा अन्योन्याश्रित सम्बन्ध रहा है। ढाल-तलवार-से दोनों एक-दूसरे से पूरक हैं। शक्ति के प्रतीक महाराणा प्रताप और भक्ति की प्रतीक मीरांबाई दोनों ही बेजोड़ अतुलनीय हैं। मेवाड़ की चप्पा-चप्पा भूमि इतिहास की अमरबेल है। यहां जितने भी गढ़-गढ़ैया हैं, इतिहास-संस्कृति के अकूत खजाने लिये हैं। ये ही हमारी विरासत और धरोहर के सांचे दस्तावेज हैं।

'मेवाड़ में तेरापंथ : अतीत का सिंहावलोकन' नामक ग्रंथ चार खण्डों में 1900 पृष्ठों का एक ऐसा वृहद शिलाखण्ड है जिसे शासनसेवी समाज विभूषण लक्ष्मणसिंह कर्णावट ने ग्यारह वर्षों की अथक साधना से संपूरित किया है। लिए उन्होंने मेवाड़ स्थित 300 गांवों का पद-पद, आंख-पांख पर्यालोचन किया है। वीर विनोद की तरह यह ग्रंथ भक्ति सुधाकर के रूप में तेरापंथ का प्रकाश परिमल ही बन पड़ा है। ग्रंथ लेखन की प्रेरणा इतिहासविज्ञ कर्णावटजी को साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा से मिली। वे लिखते हैं- 'मेवाड़ से विदा होते समय श्रद्धेय साध्वी प्रमुखा कनकप्रभाजी ने कहा- मेवाड़ तेरापंथ का एक ऐसा क्षेत्र है जहां ग्यारह आचार्यों में से दस का पदार्पण हुआ है। आचार्य भिक्षु यहां पधारे ही नहीं, तेरापंथ की बुनियाद रखी और महाश्रमणजी आप लोगों के बीच में हैं।

तब से लेकर अब तक कौन-कौन आचार्य, कितनी बार, किन-किन क्षेत्रों में, किन-किन परिस्थितियों में रहे ? उस समय यहां की राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियां क्या-क्या थीं ? इस सम्बन्ध में मेवाड़ का समग्र इतिहास एक जगह उपलब्ध नहीं है। यहां के जो व्यक्ति यहां बैठे हैं। उपासक और प्रबुद्ध लोग भी हैं। डॉ. महेन्द्रजी कर्णावट भी हैं, लक्ष्मणजी भी हैं। इनमें से कोई भी उस इतिहास को व्यवस्थित रूप दे सकते हैं।' (मेवाड़ में तेरापंथ, खण्ड-1, स्वकथ्य, पृ. xxi)

डॉ. कोठारी के साथ डॉ. भानावत को ग्रंथ भेंट करते कर्णावट

ग्रंथ की भूमिका में जैन धर्म दर्शन एवं संस्कृति के प्रख्यात विद्वान डॉ. देव कोठारी ने ठीक ही लिखा- 'यह वृहदकाय ग्रंथ श्री कर्णावटजी के अभूतपूर्व, सराहनीय और श्लाघनीय कार्य का पारदर्शी प्रमाण है। उनके श्रम, समर्पण, निष्ठा, कर्मठता और बहुमुखी प्रतिभा की जितनी प्रशंसा की जाय, कम है। इससे तेरापंथ धमसंघ को एक नई व अनूठी पहचान मिली है।' ग्रंथ में मेवाड़ के चारों जिलों- राजसमन्द, उदयपुर, भीलवाड़ा और चित्तौड़गढ़ की सभी तहसीलों तथा गांवों में तेरापंथ के प्रादुर्भाव से लेकर सन् 2017 तक की विकास यात्रा का विस्तृत विवरण दिया गया है। उन्होंने इसे तेरापंथ धर्मसंघ का एक ऐसा इनसाक्लोपीडिया कहा है जिसमें सूक्ष्म से सूक्ष्म बात से लेकर बड़ी से बड़ी बात या उपलब्धि तक का संकलन है। (वही पृ. xi- xii)

इससे पूर्व डॉ. कोठारी ने इसी धर्मसंघ पर 'मेवाड़ में तेरापंथ का इतिहास' नाम से 498 पृष्ठों का ग्रंथ लिखा था किन्तु कर्णावटजी ने उसे विस्तार देते हुए विहंगम रूप दिया है।कर्णावटजी लोक की आंख से इतिहास में निखार लाकर उसे लोकरंगी जामा पहनाने के कुशल चितेरे हैं। उनकी दृष्टि में बहुत सा असल इतिहास तो कागज पर लिखा जाना ही शेष है। इसलिए वे जहां-जहां भी जाते हैं वहां की विरासत और वैभवपूर्ण संस्कृति को निहारते हुए उसे शुद्धि देने का प्रयत्न करते हैं।

वे बताते हैं कि मेवाड़ में अनेक गांव ऐसे हैं जहां के लोगों का अभूतपूर्व योगदान रहा है पर लेखकों ने उनको कहीं अपनी कलम से कमनीय नहीं बनाकर प्रभावी व्यक्तित्वों पर ही अपना ध्यान केन्द्रित किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह कार्य अहम प्राथमिक था पर सब अपनी-अपनी ढपली बजाकर अपना-अपना राग ही छेड़ते रहे इसलिए जो कुछ इतिहास बन पाया वह भी प्रामाणिकता का संदेह लिये रहा।

यह भी हुआ कि इधर पहलीबार विदेशी विद्वानों का ही ध्यान गया। वे अपने सोच में तो सही और निष्पक्ष थे किन्तु यहां की ठेठ भाषा-बोली किंवा वाणी-व्यवहार और जीवनधर्मिता से आत्ममेव नहीं थे। जिन्होंने जितना जो कुछ बताया उसे ही उन्होंने आंख मींचकर विश्वसनीयता के साथ लेखन किया। तब भी उन्होंने इतिहास लेखन के क्षेत्र में जो कार्य किया उसका श्रेय तो उन्हें सम्मानपूर्वक दिया ही गया।

कर्णावटजी को यह सब ज्ञात है इसीलिए वे जरा सा कोई महत्वपूर्ण सूत्र भी हाथ लग जाता है उसकी गहरी छानबीन करते उसे लिपिबद्ध करते हैं और बाजवक्त जब उन्हें लगता है कि इसे काव्य रूप में ढालने पर इसका जनव्यापी प्रभाव हो सकता है तो वे यह कार्य भी बड़ी दक्षता के साथ सहजतापूर्वक कर गुजरते हैं।

एक छोटी सी बैठक के दौरान जब उनसे उनकी काव्य-प्रस्तुति सुनी गई तो हमें उनका यह पक्ष जानकर भी बेहद आश्चर्य ही हुआ। वे जब किसी वीर भावी कविता, घटना की प्रस्तुति करते हैं तो उस वातावरण को शौर्यपूर्ण जोशीला बनाकर जो अनूठी छवि देते हैं वह श्रोताओं में ठेठ भीतर तक रोमांचित कर रगरंगी बना देते हैं।

जैन विश्व भारती, लाडनूं-341306 से प्रकाशित इस ग्रंथ का प्रत्येक खण्ड चार सौ रूपये मूल्य का है। ग्रंथ सबके लिए पठनीय तथा संग्रहणीय है।

कहां खो गए वो गांव ?

'भारत देश गांवों का देश है', यह कथन एक कहावत ही बना हुआ है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने तो 'भारतमाता ग्रामवासिनी' लिखकर इस पर अपनी प्रामाणिक मोहर ही लगा दी। उन्होंने तो गांवों को बहुत नजदीक से देखा सुना और समझा ही नहीं, जन्म ही गांव में लिया। पहले शहर कहां कितनेक होते थे सो जितने भी विशिष्ट, असाधारण और कुछ कर गुजरने वाले हुए, सब गांव की ही प्रतिभा थे।

गांव की गंध-सुगंध और उसी की मिट्टी, हवा, पानी के बने, बड़े हुए थे। गुप्तजी की वे पंक्तियां तो आज भी गांव को महत्व देती सुनाई पड़ती हैं- 'अहा ग्राम्य जीवन भी क्या है / क्यों न इसे सबका मन चाहे / थोड़े में विश्राम यहां है, ऐसी सुविधा और कहां ?' महात्मा गांधी, विनोबा भावे ने भी स्वराज को ग्राम स्वराज कहा। वर्षों पूर्व दिल्ली में सर्वे हुआ जिसमें कहा गया कि वहां विभिन्न क्षेत्रों के जो विशिष्टजन ख्यात-प्रख्यात हैं उनमें से अस्सी प्रतिशत गांवों के निवासी हैं।

भारत गांवों का देश है इसीलिए 'परम्पराओं का देश' के रूप में पूरे विश्व में ख्याति लिये रहा। सभ्यता का प्रकाश और विकास यहां से प्रारम्भ होकर पूरे जग में व्याप्त हुआ। प्रसादजी ने लिखा- 'जगे हम, लगे जगाने देश, विश्व में फैला फिर आलोक.... अखिल संस्कृति हो उठी अशोक।' भारत की असली पहचान ही उसके जगद्गुरु होने और

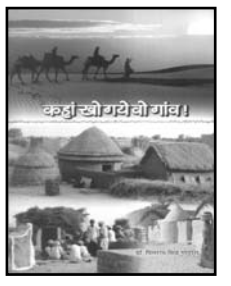

भारतीयता में है। इन सबके मूल में यहां के गांव, गांवों के निवासी, उनकी परम्पराएं, सामाजिक सरोकार, सांस्कृतिक सोपान और आंचलिक परिवेश, सबदवाणी और लोकभाषा, लोकाचार और लोक व्यवहारजनित भौगोलिक परिवेश, प्राकृतिक संरचना और अध्यात्म का उद्घोष आज भी अनेकों के लिए रहस्यमय, चमत्कारिक तथा अदृश्य, अबूज रहे हैं।

इसी भावभूमि को लेकर ग्रामीण चित्त में जीवन निर्वाह करने वाले डॉ. पितरामसिंह गोदारा ने 'कहां खो गये वो गांव!' पुस्तक की रचना की है। इसमें गांव की अवधारणा से लेकर नामकरण, चौक चौपाल, स्वावलम्बन, रीति-रिवाज, तीज त्यौहार, मनोरंजन के साधन, खेल, समृद्ध परम्पराएं आदि को लेकर दस सोपानों में अपने आत्मानुभवों का गहन विश्लेषण किया है। चूंकि लेखक राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र से सम्बन्धित हैं अत: स्वाभाविक है उनके अध्ययन में उस अंचल का ही प्राधान्य रहा है।

राजस्थान अपने प्राकृतिक भू भाग में एक जैसा नहीं है। यहां मारवाड़, मेवाड़, ढूंढ़ाड़, हाड़ौती, वागड़, मेवात जैसे विविधनामी क्षेत्र अंचल हैं जो अपनी निराली बसावट और जनधर्मिता के कारण एक जैसे नहीं हैं। रहन-सहन, खान-पान तथा भाषा-बोली आदि सभी दृष्टियों से भिन्न-जुदा हैं लेकिन अन्तर्धारा सभी की समान है। विभिन्नता में एकता और एकता में बहुलता पूरे देश की जन मन गणी संस्कृति की पावन पहचान बनी हुई है।

सब कुछ होते हुए भी अब वह समय नहीं रहा। बहुत कुछ बदलता परिवेश दृष्टिगत हो रहा है जो स्वाभाविक भी है। जब कोई अंचल अपनी आंचलिकता से बाहर निकल अन्तर्राष्ट्रीयता के सम्पर्क में आता है तो उसके लिए उस दौड़-होड़ में अपनी पैठ और पहचान बनाने के लिए बहुत कुछ पुराना छोड़, बहुत कुछ नया ग्रहण करना पड़ता है। यह कोई चुनौती भी नहीं है और नैराश्यपूर्ण विडम्बना भी नहीं बल्कि अपनी विरासत और धरोहर के प्रति ध्यान आकर्षित करने और उसकी उपयोगी मूल्यवत्ता का संरक्षण करने तथा विश्व बाजार में उसकी प्रतिष्ठा बनाये रखने का एक विनम्र उपक्रम देती यह पुस्तक लिखी गई है। इसे अधिकाधिक पाठकों, खासकर युवाओं के हाथों में देने हेतु इसका मूल्य भी लेखक ने पठन, चिन्तन एवं मनन रखा है।

लेखक ने मेरी बात में लिखा भी - यह पुस्तक उन युवाओं के लिए है जो अपनी ग्रामीण संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। उन अभिभावकों के लिए भी है जिन्होंने अपने बच्चों को अपनी जड़ों से अवगत नहीं कराया है। ऐसे में अपनी जड़ों को जानने व समझने में यह पुस्तक उनकी मदद करेगी। यदि समय रहते कुछ सकारात्मक नहीं किया तो केवल पछतावा ही रह जायेगा।

प्राक्कथन में सुधी साहित्यकार केसरीकांत शर्मा 'केसरी' ने लिखा- एक जिम्मेदार लेखक के रूप में डॉ. गोदारा ने ग्राम्य जीवन की तहों में समाये भाव-संवेदन को अनुभवगत चेतना की भीतरी ऊर्जा से यह कृति ग्राम्य जीवन में व्याप्त चुनौतियों से सामना करने हेतु नैतिकवादी जीवन दृष्टि और सामाजिक सौहार्द के लिए मानवीय धरातल तलाशने की दिशा में प्रभावशाली संतुलित दृष्टिकोण का निर्माण करते एक अनुपम उपहार के रूप में प्रस्तुत की है जिसके लिए उनकी जितनी प्रशंसा की जाय, कम है।

परिशिष्ट में विविध अवसरों, त्यौहारों तथा देवी-देवताओं से सम्बन्धित गाये जाने वाले लगभग चार दर्जन गीत देने का स्तुत्य प्रयास किया है।

लगभग सवा दो सौ पृष्ठ की इस पुस्तक का प्रकाशन डॉ. अक्षयकुमार गोदारा, 318, गोदारा मिलयम, आवासन मण्डल कोलोनी, चुरू रोड़, झुंझुनूं (राज.) ने किया है। **- म. भा.**

स्मृतियों के शिखर (93) : डॉ. महेन्द्र भानावत

रासलीला में राम-सीता का अद्भुत कौशल

राजस्थान के दक्षिणी अंचल मेवाड़ में रासधारी ख्याल में राम लक्ष्मण और सीता पंचवटी में आकर निवास करते हैं। सीता अपनी कुटिया के पास एक सुन्दर सा बगीचा लगाती है। इसमें लगे फलों को रावण का भेजा हुआ माया-मृग खा जाता है। सीता उस माया-मृग पर मुग्ध हो जाती है और राम से उसका शिकार कर अपनी कंचुकी के लिए खाल लाने को कहती है। राम नहीं चाहते हुए भी सीता के कहने पर मृग के शिकार पर जाते हैं और अपने बाण से मृग को मार गिराते हैं। मरते समय वह हा लक्ष्मण का उच्चारण करता है। सीता यह करूण स्वर राम का समझकर अपने देवर लक्ष्मण को उनकी रक्षा के लिए भेजती है। भाभी की आज्ञा को शिरोधार्य कर लक्ष्मण सीता के इर्दगिर्द कार (रेखा) खींचकर चले जाते हैं। थोड़ी ही देर बाद साधुवेश में रावण प्रवेश करता है और सीता से भिक्षा मांगता है। सीता रावण के भुलावे में आकर लक्ष्मण की खींची हुई कार से बाहर आकर रावण को भीख देने निकलती है। इतने में रावण उसका हरण कर लेता है।

यहां के ख्यालों का अपना कोई विशिष्ट मंच नहीं होता। रंगस्थली के इर्दगिर्द लोग बैठ जाते हैं और ख्यालों का रंग प्रारंभ हो जाता है। किन्हीं विशिष्ट तपके के ख्यालों में मंच के रूप में शानदार मेड़ी बनाई जाती है जहां स्त्री पात्र टेरें देता हुआ नीचे मुख्य मंच पर आता है। अमरसिंह राठौड़ के ख्याल में यह मेड़ी अपनी कलात्मक सज्जा के कारण प्रत्येक को अपनी ओर आकर्षित कर लेती लेकिन अब तो ख्यालों का वह दौर ही जाता रहा। केवल जो कुछ बड़े-बूढ़े बचे हैं वे अतीत की उन रंगीनियों में खोकर गमगेर हो जाते हैं।

मेवाड़ में ऐसे उदाहरण कई मिलते हैं जबकि रचनाकार कोई और अज्ञात होता है लेकिन उस रचना में छाप किसी प्रसिद्ध रचनाकार की रहती है। ऐसी असंख्य रचनाएं मिलेंगी जिनके रचनाकारों ने अपने को अनजान रखते हुए मीरां, कबीर, चंद्रसखी, रैदास आदि के नामों से लोक में प्रवाहित कीं। मैंने ऐसे कई गाथा गायकों, भजनिकों, कीर्तनियों से भेंट की जो अपनी मंडलियों के माध्यम से विशिष्ट अवसरों पर बुलाये जाते हैं तब तन्मय होकर वे नानाविध छंदों की स्वत:स्फूर्त रचना करते, समूहबद्ध आनंद विभोर हो, रात-रात भर समा बांध देते हैं। ऐसे चित्तौड़गढ़ जिले के आकोला गांव के मोहनजी हुए जिन्होंने पचास हजार पदों की रचना की, सर्वथा अनाम होकर और उन गायक जातियों तथा मंडलियों को दिये जो आज भी उन्हें गा-गाकर अपनी आजीविका चला रही हैं। मोहनजी ने सर्वाधिक पद प्रेमदास की छाप के लिखे। इसके अलावा उनके लिखे पदों में उनके संगी-साथी देवीलाल, जोरावरमल, गंगाराम, कालूराम, रामलाल, राघवलाल, टेकचंद, शंकरलाल, लछमीलाल आदि के नाम मिलते हैं।

ब्रज की रासलीलाओं तथा मथुरा की रामलीलाओं की तरह रासधारी का कथानक सुगठित, सधाबधा और क्रमबद्ध नहीं है। ख्याल तत्वों की दृष्टि से भी इसका रूप खरा नहीं उतरता है। गीत, नृत्य तथा हास्य विनोद पर इसमें अधिक जोर दिया गया है। इसका राम अवतारी भी है और जन्मधारी भी। वह असाधारण भी है और अति साधारण, सामान्य भी। मजाकिया, सांगड़िया, वादक तथा पाछला मिलकर इसमें अपने संवादों, हंसीमजाकों से जान फूंकते हैं और दर्शकों का भरपूर मनबहलाव करते हैं।

गणपति वंदना से प्रारंभ हुए इस ख्याल में ब्रह्मा के पीछे-पीछे मजाकिया प्रवेश करता है। ब्रह्मा बस्ती के लोगों को सूचना देता है कि धरती को पवित्र करने के लिए रामचंद्र महाराज ने अवतार लिया है- 'सुणो रे भाई लोगां, रामचंद्रजी महाराज धरती पै अवतार लीधौ है जमीं पवित्तर करण कै वास्तै।' ब्रह्मा के प्रस्थान करते ही सांगड्या प्रवेश करता है और राम जन्म की सूचना देता है- 'राजा दशरथ घर भगवंत जनम्या, कौसल्या की कूंख भई/ दाईमाई दैत बधाई, घर-घर मंगल थई।' और मजा देखिए राम का जन्म होते ही लंका में खबर चली जाती है कि रावण तू सावचेत होजाय, तेरे हाथ से तेरी लंका गई समझ। सांगड्या गाता है- 'चेतन हो तो चेत पिया रावण, अब तेरी लंका गई।' यह खबर कौन दे रहा है? क्यों दे रहा है? कैसे और किसके हाथ पहुंचाई जा रही है?

राम के जन्म होने की सूचना भर हो गई। बाल्यावस्था का कोई जिक्र नहीं, वर्णन, चित्रण नहीं। सीता हरण पर इसमें सर्वाधिक जोर दिया गया है। पंचवटी में पर्यावरण का पूर्ण ध्यान रखा गया है। पूरी प्रकृति का सान्निध्य है। सीता बाड़ी लगती है। मरवा, मोगरा, हजारी के फूलों से वातावरण खुशनुमा बनता है। केसर कस्तूरी का खाद और गंगाजल के सींचन से बाड़ी का माहात्म्य दृष्टिगोचर होता है। उस बाड़ी को स्वर्ण मृग नित्य आकर चुग जाता है। सीता तब उसे कहती है- 'पापी, क्यों सबकी डालें तोड़-मरोड़ करता है?' यहां सांगड्या सीता और राम के बीच संवाद पहुंचाने की महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। ऐसा अन्यत्र भी होता है। रावण जब भिक्षा लेने आता है तब भी मजाकिया होता है जो सीता-रावण के बीच संवाद-सेतु का काम करता है।

बाडी के प्रसंग में सांगड्या की भूमिका देखिए। सीता उससे कहती है- 'जो रामजी बाड़ी की रखवाली न कर सके वे मेरी रक्षा कैसे कर लेंगे?' सांगड्या राम के पास जाकर

कहता है- 'सुनो रामजी महाराज, मातेश्वरी जानकी का कहना है कि जो रामजी बाड़ी की रखवाली नहीं कर सके, वे मेरी कैसे कर सकेंगे?' राम कहला भेजते हैं- 'सुन भाई, जानकीजी को कह देना कि वे बाड़ी की और उनकी, दोनों की रक्षा कर लेंगे। वह यह बात सीताजी को जा कहता है। सीता उसके साथ कहला भेजती है- 'देख रे भाई, भगवान को जाकर कह देना कि स्वर्ण मृग आये तब उसे मार कर खाल लायें और मेरी कंचुकी सिलाएं तो ठीक नहीं तो मैं अटवारी-खटवारी लेकर नरणी पड़ी रहूंगी' अर्थात् रूष्ट होकर अकेली रहूंगी।

यह कहकर सीता जो भावभंगिमा व्यक्त करती है उसी कथन को सांगड्या जिस हास्य-विनोदमय ढंग से राम को प्रस्तुत करता है उससे दर्शकों में हंसी-ठट्ठा और विनोद ही अधिक व्याप्त होता है। यही इसका लक्ष्य भी है अन्यथा नहीं कुछ दूरी पर खड़े राम-सीता आपस में संवाद नहीं कर सांगड्या का माध्यम क्यों अपनाते? यह चारित्रिक मर्यादा का प्रस्तुतीकरण नहीं कहा जाकर मात्र परिपाटीमूलक मनोरंजन देने का उपक्रम ही है।

इससे भी भरपूर मनोरंजन साधुवेश में रावण के आने पर होता है। यही सबसे लम्बा प्रसंग है जिसमें सीता भी मजाकिये के साथ छककर विनोद करती है। वह रावण को कहलाती कुछ और है और रावण को मजाकिया कहता कुछ और है। ऐसा ही रावण के द्वारा सीता को कहलाया संवाद है जिसमें मजाकिया अपनी प्रत्युत्पन्न मति से अपनी बात जोडता हुआ दर्शकों का खासा मनोविनोद करता है। एक संवाद देखिये-

रावण - सीता माता को कहो कि बाहर एक ओलिया अवधूत आया है।

मजाकिया- माताश्री, आपके बाहर एक मोटा भूत आया है।

सीता- भूत आया है तो मंत्र से उसे कील दो।

रावण- जाकर कहो कि पीर पठान आया है।

मजाकिया- महाराज के हवा ज्यादा भर गई सो पेट में पीड़ चलने लगी है।

सीता- पीड़ चल रही हो तो अदक धणा, फदक धणा, लीला थोथा, सोवण खार, संट्या और केले की जड़ को बांट घोट उल्टे घाघरे में घुटकी देने से आराम हो जाएगा।

जाहिर है, इस कथन से दर्शकों में हंसी ठट्ठा ही फूटता है। रावण के भिक्षा मांगने पर सीता कहती है कि कार लांघ कर मैं नहीं आसकती, जलकर भस्म हो जाऊंगी तब रावण उपाय बताता है, 'कार के ऊपर बाजोट रखो। बाजोट पर पांव धरो और मोती की थाल भर भिक्षा दो नहीं तो भस्म होने का श्राप दूंगा।' सीता यही करती है कि रावण उसे उड़ा ले जाता है। पाछला गाता है- 'तुलसीदास आसा रघुवर की, हरि को ध्यान लगायो, सीता पकड़ झोली में डाली, जोगी तो लंक सिधायो।

28 अप्रेल 1968 को चित्तौड़ के पास पालका गांव में जाना हुआ। वहां रासधारी के कोलाराम, प्रभुदास, घासी धाकड, शंकरनाथ, रोडा दरोगा, राधाकिशन बडे नामी कलाकार थे जो क्रमश: राम, लक्ष्मण, रावण सखी बडी, छोटी सखी, ब्रह्मा का अभिनय करते थे। पार्श्वगायक उदयराम थे।

चित्तौड़गढ़ के पास पालका गांव में 28 अप्रेल 1968 को रासधारी के रसिक गांव के मोतबीरों ने बताया कि वहां पचास बरस से यह खेल होता रहा है। उन्होंने समूह रूप में गाकर रासधारी की गायकी के कुछ नमूने भी सुनाये। यथा-

(1) जाय हरि वन में कुटिया बणाई
भोजपतर की बणी मंडैया चंदन बली लगाई
हरी-हरी बाड़ी बोय दई तो मुरगा री बण आई।

(2) अलख जगायो राम की मंडी में जोगी ने अलख जगायो
अंग भभूत राख कर जोगी अंदर पूंख घर आयो
आसन मार मंडी में बैठो तब जोगी नाद बजायो।

(3) सीता ने कौन हरी रे लछमण रे कौन हरी
उड़ उड़ काग मंडी पर बैठो सूनी मंडिया पायो
गिरवर चढ़ नै सरवर देख्यो सीता कूप में गिरी
के तो ले गयो लंकापत रावण कण तो सींगणी भरावी रे।

राम का बिड़ला हनुमान झेलता है और सीता का पता लगाता है। पर्यावरण पर तब भी पूरा ध्यान रखा जाता था। सीता मिरगले (मृग)से कह रही है-

मती तोड़ मारी डाल रे मिरगा,
सोवन मुरगो रूप रावण को, एक आवे दूजो जावे रे
लाख-लाख का तोड्या रे रुंखड़ा,
क्रोड़-क्रोड़ की डाली टूट जावे रे।

राम-सीता और रावण-मंदोधरी के साथ-साथ अन्य जो भी प्रसंग रासधारी में देखने को मिलते हैं वे सबके सब क्रम, काल, समय, स्थल आदि किसी की मर्यादा में बंधे नहीं लगकर पूर्ण स्वच्छंद लगते हैं। घटनाएं अपनी मनमर्जी के अनुरूप उछलती, कूदती, फैलती, सिकुड़ती नजर आती हैं। कब राम वन के चौदह वर्ष व्यतीत हो गए? कब लक्ष्मण मूर्छित हुए और संजीवनी बूटी लाई गई, कुछ पता ही नहीं चला पर जनता जनार्दन को जो राम-रस प्राप्त होता है वही मुख्य है। पारंपरिक नाट्य तत्वों पर खरे-अ-खरे उतरने का सवाल अलग है। लोक में जो प्रस्तुतीकरण खरा उतर गया वही महत्वपूर्ण और सफलता का कीर्तिमान है।

यह तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि रासधारी के सभी पात्र चाहे वे पौराणिक हों, ऐतिहासिक या कि धार्मिक, वे अपने समय का प्रतिनिधित्व नहीं करते। यदि ऐसा होता तो राम मेवाड़ी पगड़ी, घाघरेनुमा झग्गे और चूड़ीदार पाजामे में नहीं होते। सीता ग्रामीण स्त्री के घाघरा कांचली ओढ़नी और मेवाड़ी जेवर में नहीं होती।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 15 फरवरी 2020

सम्पादकीय

समय का पिंजारा और लोकतंत्र

यह हमारे देश की ही खूबी है कि यहां सतयुग के श्रीराम-सीता का आदर्श अभी भी कायम है। तुलसी की रामायण की चौपाइयां धार्मिक अनुष्ठानों की रीढ़ बनी हुई हैं। बजरंगबली हनुमान की शक्ति का लोहा यथावत कायम है।

आजादी के बाद लोकतंत्र की हवा तो बही पर उसकी उथलपुथल शांत नहीं हुई। राजनैतिक दलों का वर्चस्व तो बढ़ा पर क्षेत्रीय पार्टियां और छुपपुट नेताओं की बन आई। वे जिस त्वरा से उभरे, धड़ाम से ठंडे भी हो गये। इस दौरान वोटर अपना प्रभाव नहीं दे पाये। वे उधेड़बुन में रहे। वर्चस्व वालों का दबदबा भी उन्हें दबोचता रहा। तनिक से लोभ लालच ने भी उन्हें अपना बना लिया।

कोई सात दशक बाद अब एक भिन्न स्थिति देखने को मिल रही है। एक नये तरह का बदलता स्वरूप देखा जा रहा है। वोटदाता की भी अहमियत बनी है और शासनकर्ता को भी सूझ मिली है कि लोकतंत्र को मनमर्जी की तरह नहीं हांका जा सकता।

प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी की छवि उभरी है तो मुख्यमंत्री के रूप में अरविंद केजरीवाल का मानक बना है। गरीबी रेखा मिटती नजर आ रही है। व्यर्थ की नारेबाजी और घोषणाओं का वक्त जाता लगता नजर आ रहा है। जोर जबर्दस्ती करने, चीखने, चिल्लाने तथा हाकाहूकी करने से आदमी बड़ा नहीं बनता। आंख दिखाने से इतिहास नहीं बनता। पोल खुलने पर बनाबनाया रेत का टीला ढह पड़ता है।

लोकतंत्र ऐसे ही नहीं पकता, विकसित होता है। समय का पिंजारा कैसी रूई धुनता है, यह देखने की बात है।

राजस्थानी लोक भाषा का विराट स्वरूप

- बी. एल. माली 'अशांत' -

राजस्थानी आर्य भाषा परिवार की भाषा है। इस परिवार में मारवाड़ी, मेवाती, हाड़ौती, मेवाड़ी, वागड़ी, शोखावाटी, बागड़ी (पंजाबी-राजस्थानी) आदि 72 उपबोलियां हैं।

इस भाषा परिवार में राजस्थानी क्षेत्र से बाहर मालवा की मालवी, मध्यप्रदेश की खैराड़ी, हरियाणा की बांगडू सदस्य है। गुजराती, पंजाबी-डोगरी, मराठी आदि का इससे रिश्ता-नाता है। ब्रजभाषा से भी इसका काव्यगत सम्बन्ध है। डिंगल की भांति पिंगल काव्यशौली राजस्थानी मिश्रित ब्रज का ही रूप है।

गिरनार कच्छ-काठियावाड़ से प्रयागराज तक के क्षेत्र में मरु भाषा के भाषाई परिवार का भाईपा है। पूर्व से पश्चिम तक की ब्रज भाषा, दक्षिण से पूर्व तक की बुन्देली, मराठी और गुजराती तथा पंजाब तथा बांगरू भाषा क्षेत्र राजस्थानी परिवार से जुड़ा क्षेत्र है।

विंध्याचल और अरावली के बीच की पहाड़ी में भीली बोली जाती है। यह आदि राजस्थानी का वृहत् क्षेत्र है। मध्यप्रदेश के मंदसौर, उज्जैन, रतलाम, राजगढ़, देवास, इन्दौर, खण्डवा, मालवी क्षेत्र में सम्मिलित होने से इनका रहन-सहन, खानपान, बोली-चाली में राजस्थानी का रंग समाविष्ट है। ऐसे ही हरियाणा के रोहतक, सोनीपत, हिसार, गुड़गांव, जींद, महेन्द्रगढ़, नारनोल जिलों में प्रचलित बांगडू राजस्थानी का ही एकरूप लिये है।

इसी तरह गुजराज, पंजाब, हरियाणा, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र के कई हिस्से राजस्थानी परिवार से सम्बद्ध है। कुछ अंशों तक जम्मू की डोगरी तथा नेपाल की नेपाली में भी राजस्थानी का पुट मिलता है।

इस भाषा-परिवार ने सरस्वती नदी का पालन पोषण किया। माही, सोम, जाखम, साबरमती, बनास, जोजरी, लीलड़ी, बांडी, लूनी, सूरड़ी, जवाई, चम्बल इसी भाषा का पानी लिये है। बेड़च, कोठारी, पार्वती, खारी, कालीसिंध, बाणगंगा, डंड, मोरेल, गंभीरी, साबी, सोता, सटकनली, काटली आदि नदियों ने इस भाषा-संस्कृति के निर्माण में बड़ा सहयोग दिया। यहां तक कि यमुना भी इसके लिए बही है। इस प्रकार इस भाषा का परिवार अत्यन्त प्राचीन है। यह प्राचीन रूप काली बंगा के रंगमहल, बागौर, गणेश्वर तथा दक्षिणी राजस्थान के झालावाड़ में परिलक्षित है। वागड़ के डूंगरपुर-बांसवाड़ा में सभ्यता के प्राचीन रूप मिलते हैं। भीलवाड़ा-चित्तौड़ क्षेत्र आदि सभ्यता के विस्तार-क्षेत्र रहे हैं।

भाषा पहली बोली है। लिपि बाद में आई। राजस्थानी भाषा का स्वरूप अलिखित रूप में पहले बन गया था। इसकी वंशावली लोककण्ठों पर मिलती है। साहित्य का इतहास रचित स्वरूप में है। लिखित स्वरूप तो इतिहास को अ-इतिहास से बंधा होगा। राजस्थानी पांचवीं-छठी या कि दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी की भाषा नहीं है। इसका इतिहास और परिवार अत्यन्त प्राचीन है। विराट जनसमूह और लोकभाषाएं उसी विराट लोक याकि समूह की भाषाएं हैं। राजस्थानी इसी विराट समूह की लोकभाषा का विराट स्वरूप है।

(लेखक की राजस्थानी भाषा विज्ञान पुस्तक से हिन्दी में अनूदित, पृष्ठ 143-144 से)

अक्षय और इलियाना ब्रैंड एंबेसेडर बने

उदयपुर। भारतीय एफएफसीजी ग्रुप केविनकेयर ने अभिनेता अक्षय कुमार और इलियाना डिक्रूज को ब्रैंड इंडिका का नया ब्रैंड एंबेसेडर बनाने की घोषणा की। पर्सनल केयर एंड एलाएंसेस के निदेशक और सीईओ श्री वेंकटेश विजयराघवन ने कहा कि वर्ष 2008 में इंडिका ने 10 मिनट में बालों को कलर करने का शानदार फॉर्मुला लाकर हेयर कलर सेगमेंट में एक क्रांति ला दी थी। उन्होंने कहा कि हमें खुशी है कि अभिनेता अक्षय कुमार और इलियाना डिक्रूज जैसे मशहूर और प्रतिभावान कलाकार हमारे ब्रैंड का प्रतिनिधित्व करेंगे।

मुंबई फूड फेस्टिवल में मेवाड़ से मारवाड़ तक की रेसिपी का महत्व बताएंगी डॉ. सिंगी

उदयपुर। मेवाड़ की बेटी उदयपुर की डॉ. अनिता सिंगी को मुंबई के फाइव स्टार सोफिटेल होटल ने राजस्थानी फूड फेस्टिवल के लिए आमंत्रित किया है।

डॉ. अनिता मुंबई में 21 फरवरी से 1 मार्च तक होने वाले फूड फेस्टिवल में मेवाड़-मारवाड़ तक की रेसिपी तैयार करेंगी तथा उनके सांस्कृतिक महत्व को बताएंगी। सोफिटेल होटल मुम्बई के रेस्तरां टस्कर्स में यह आयोजन होगा। इसमें डॉ. अनिता 10 दिनों तक मेवाड़ से मारवाड़ तक बनने वाले बहुत ही खास और लजीज व्यंजनों की स्वाद यात्रा करवाएंगी व राजस्थान के महान फूड हेरिटेज के बारे में भी बताएंगी। कई फूड विशेषज्ञों से की बातचीत के बाद डॉ. सिंगी का चयन किया गया है।

डॉ. सिंगी ने बताया कि मेवाड़ से मारवाड़ तक मुंह में पानी लाने वाले व्यंजनों का आनंद सभी उठा पाएंगे। वे मेवाड़ से मारवाड़ तक के जीवंत जायकों, दादी, नानी के पुराने ओथेंटिक व्यंजनों का रसास्वादन कराएंगी फिर चाहे वो मक्की का ढोकला हो या पानिया, चाहे मालपुआ हो या घेवर। यह भोजन, माहौल, स्वाद मेवाड़ से मारवाड की परम्पराओं, संस्कृति और आतिथ्य की भूमि पर ले जाएगा।

गौरतलब है डॉ. अनिता को हाल ही में नेशनल आंवला रेसिपी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। डॉ. अनिता का गृहिणी से होम शेफ बनने तक का सफर बहुत ही दिलचस्प हैं। वे बताती हैं कि अलग-अलग रेसिपी को मिक्स-मैच करके नई रेसिपी बनाना उनका पैशन है। वे खास तौर पर मेवाड़ और मारवाड़ की ऐसी रेसिपी को प्रमोट करती हैं जो लुप्तप्राय हो चुकी है।रेसिपी के साथ ही उसकी न्यूट्रीशियन वेल्यू और उससे जुड़े किस्से-कहानियों को भी बहुत खूबसूरती से बयां करती हैं।

स्टूडियो शिफ्ट में किया शहर से मोहब्बत का इजहार

उदयपुर। वेलेंटान डे पर जब पूरी दुनिया में इजहारे-मोहब्बत की बात हुई तो फिर भला उदयपुर कैसे पीछे रहता। उदयपुराइट्स ने भी अपनी मोहब्बत का इजहार किया मगर अपने प्यारे शहर के साथ। यह खास मौका दिया 92.7 बिग एफएम ने।

92.7 बिग एफएम के मनीष मेनारिया एवं अर्थ डाइग्नोस्टिक सेंटर के डॉ. अरविन्दर सिंह ने बताया कि 92.7 बिग एफएम की ओर से 14 से 16 फरवरी तक अर्थ डाइग्नोस्टिक के सहयोग से राजीव गांधी पार्क में बिग स्टूडियो शिफ्ट का मेगा आयोजन किया गया। इस दौरान 92.7 बिग एफएम पूरे 24 घंटे लाइव रहा जिसमें कविता, कहानी, टॉक शो, म्युजिकल परफॉमेंस और चौपाल जैसे कार्यक्रमों की धूम रही। शहर के 927 छात्रों ने पेंटिंग और अन्य गतिविधियों में हिस्सा लिया।

शहरवासियों ने शहर से प्यार का इजहार किया और बिग स्टूडियो के साथ सेल्फी ली। इस अवसर पर घूमोसा डॉट कॉम की सुरभी जैन, एलआईसी के एम. के. दवे तथा इंडिया सीमेंट के भाविन सुथार भी मौजूद थे।

अध्यापक ही संस्कृति के संवाहक

सातारा (महाराष्ट्र)। नई पीढ़ी को बेहतर शिक्षा-दीक्षा देते हुए उसके व्यक्तित्व-विकास तथा सुनहरे भविष्य के लिए अध्यापक समर्पित होकर अपना दायित्व निभाते

हैं। वे ही संस्कृति के संवाहक तथा नैतिक मूल्यों का हस्तांतरण करते हैं। ये विचार राजकुमार जैन 'राजन' ने सातारा जिला हिन्दी अध्यापक मण्डल के समारोह में बतौर विशिष्ट अतिथि व्यक्त किये। उन्होंने वहां के ग्रन्थागार के लिए एक हजार पुस्तकें नि:शुल्क भिजवाने की घोषणा की। विशिष्ट अतिथि हास्यकवि घनश्याम अग्रवाल थे। हिन्दीतर प्रदेश में राष्ट्रभाषा के गौरव में अभिवृद्धि करने वाला ऐसा आयोजन हिन्दी के विराट वैभव के प्रतीक रूप में सराहा गया। **- प्रस्तुति : रविन्द्र काम्बले**

'व्हाट अ आइडिया सरजी! की वापसी

उदयपुर। ऐतिहासिक रूप से, ब्रांड आइडिया ने सामाजिक परिवर्तन के लिए मोबाइल टेलीफोनी की फिर से कल्पना की है। वर्षों से यादगार ब्रांड अभियानों में से कुछ के माध्यम से उठाए गए मुद्दे / कारण शहरी दर्शकों के लिए प्रासंगिक, समकालीन और भरोसेमंद रहे हैं, और अभी तक जनता द्वारा सराहना की जाती रही है। एक दौर था, जब 'व्हाट अ आइडिया सरजी!' ने भारत की भौगोलिक स्थितियों के साथ-साथ राष्ट्र की कल्पना समाहित कर लिया, दैनिक बातचीत का हिस्सा बन गया।

यह लोकप्रिय श्रृंखला अब दर्शकों के बीच फिर से ब्रांड जुड़ाव और आत्मीयता को पैदा करने के लिए वापस आ चुकी है। कविता नायर, मुख्य डिजिटल परिवर्तन और ब्रांड अधिकारी, वोडाफोन आइडिया लि. ने कहा कि ब्रांड के आंतरिक उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए, आइडिया ने बेरोजगारी और बेरोजगारी के मुद्दों को दूर करने के लिए आइडिया क्या विचार है 'थीम के तहत एक नया अभियान शुरू किया है। शीर्षक काम नहीं कर रहा है? नेटवर्थ को आज़माएं!

खोज-खबर

पुरूष, पति तथा प्रेमियों के विभिन्न नाम

(1) अंधारा घर रो चानणो (2) अलबेलो (3) अलबलियो (4) आंटीलो (5) आलीजो (6) भंवर (7) उछाछलो (8) उलझ्यो रेसम (9) ऊगतो सूरज (10) ईसर (11) कमधजियो (12) केसर रो क्यारो (13) केसरियो बालम (14) कंथ (15) कंवरजी (16) अनोखा कुंवर (17) उगता तायत (18) गढ़ी रा मोटा रावजी (19) घुमाना हालीजा (20) घणा जीमालू (21) घणा निदालू (22) घर खुण्यो (23) चितड़ा रा चोर (24) ख्यालीड़ो (25) गढ़पतियो (26) गाढ़ा मारूजी (27) गायड मल, (28) गुमानीड़ो (29) गोरी रो बालम

(30) गोरी रो सायबो (31) गोरी रो सूरज (32) घण हेतालू (33) घर मंडण (34) चतुर सुजान (35) चित्तोड़ो (36) चूड़ला रो सिणगार (37) छेल भंवर (38) छैल वबजी (39) छैलो (40) छेलामारू (41) जाड़ाजी (42) ढोला कंवरजी (43) दशरथ राजकुमार (44) पनजी (45) पियाजी (46) फूल बना (47) बांको राव (48) बाबलियो (49) भंवरजी (50) भंवरसा

(51) मणिहार (52) मदछकिया कंवरजी (53) मदछकिया मारू (54) मनड़ा रा मोर (55) मस्ताना हालिजा (56) जलाल (57) जलामारू (58) जलालो बिलालो (59) जलो (60) जोड़ी रो जोधो (61) जोड़ी रो जलो (62) जोड़ी रो वर (63) झिलती जोड़ी रो (64) ढोलो (65) दनिया रो दीपक (66) दुसमणां रो साल (67) धण रो सायबो (68) धणवालो (69) धणी (70) धव (71) नटवरियो (72) नवल बनो (73) नादान बनाजी (74) नीदांलू सायबा

(75) नैणां रो लोभी (76) नोखीलो प्यारो (77) पनामारू (78) परण्यां स्याम (79) परणियो (80) पातलियो (81) माणीगर मायाजी (82) माराजा भारू (83) मारूजी (84) मारू ने मुरधरियो (85) मेवाड़ी ढोलो (86) मेवाड़ा राजा (87) रमता पीव (88) राजींदा ढोला (89) रायजादा

(90) लालबबिया सरदार (91) लालचूड़ो (92)सजन (93) सनेही ढोला (94) पिया (95) पीव (96) पीतम (97) फूटरमल (98) फूलां रो भारो (99) फोजां रो मांझी (100) बरसतो बादल (101) बाईजी रो वीर (102) बांकड़ली मूंछां रो जलाल (103) बांकड़ली मूंछां रो ढोलो (104) बादीलो बालमो (105) बिलालो भरतार (106) भरजोड़ी रो (107)भालालो (108) भालो भंवरो (109) भोलीबाई रो वीर

(110) भंवर (111) मतवालो (112) मदछकियो (113) मन भरियो मरद मूंछालो (114) मस्ताना कंवरजी (115) माटी (116) माथा रो मोड़ (117) मिजलस रो मांझी (118) मिरगानैणी रो बालमो (119) मीठो मारू (120) मुरधरियो (121) मूंछालो (122) मेवाड़ो (123) मेवासी ढोलो (124) मोजी सायबो (125) मोट्यार (126) मोटा रावजी (127) रीझालू (128) रीसालू (129) रंगभीनो (130) रंगीलो (131) रंग दूल्हो (132) रंगरसीयो

(133) ललवालीयो (134) लसकरीयो (135) लाखां रो लाड़लो (136) लाखां रो लहरी (137)लाल नणद रो वीर (138) व्हालो (139) स्याम (140) सगी नणद रो वीर (141) सायजादो (142) सरदार (143) साजन (144) सायबो (145) साहिबो (146) सासू सपूती रो पूत (147) सपूती रो जीव (148) सिर रो सेवरो (149) सुगणो सेजां रो सवादी (150) सेलाणी भंवर

(151) सेलीवालो (152) सैण (153) सैणालो (154) सैणा रो लाभी (155) सैणा रो सेवरो (156) सोजतियो सिरदार (157) सांईनो (158) सांवलियो (159) सांवलियो सिरदार (160) हगामी ढोलो (161) हंजामारू (162) हठीलो(163) हरियालो (164) हिवड़ा रो जीवड़ो (165) हेतालू हंजो (166) सबरूतिया सरदार (167) साढ़ा ने सूमरियो (168) सामीड़ा (169) सायर सोढ़ो (170) सासू रो जायो (171) सुगणी बाईसा रो वीर (172) सोढ़ो हजारी ढोलो (173) हसला हाली रा ढोला (174) बरसालू बादल।

नोट : अन्य कोई नाम हों तो कृपया भेजकर सहयोग करें।

महाराणा शंभुसिंह और भैरूजी का चमत्कार

मेवाड़ के महाराणा केवल शासक ही नहीं अपितु प्रजावत्सल और उसके पृष्ठपोषक भी थे। जनहित के उनके द्वारा ऐसे अनेक कार्य हुए जिनसे आज भी उनका नाम अमर बना हुआ है। उनमें महाराणा शंभुसिंह की एक घटना पड़ चितेरे रामगोपाल जोशी ने सुनाई।

उन्होंने बताया कि देवली से आगे बूंदी जाने के रास्ते स्थित भैरूजी के देवरे के चमत्कार से उस क्षेत्र में सभी परिचित हैं। वहां हर रविवार को चौकी लगती है। अनेक जातरू पूछताछ करने आते हैं। एकबार चौकी पूरी होने पर जब सभी जातरू वहां से लौट गये। भोपा चुपचाप बैठा हुआ था। इतने में महाराणा शंभुसिंह का उधर से पधारना हुआ। उनके साथ वालों ने उस देवरे के चमत्कारों की जानकारी दी और बताया कि भोपे को भैरूजी का बड़ा करारा भाव आता है।

महाराणा की उत्सुकता बढ़ी। उन्होंने वहां जाकर भोपे को भाव लाने को कहलाया। भोपे ने यह कह मना करा कि देवता पधार चुके हैं और चौकी खत्म हो चुकी है। भोपे के मना करने पर भी महाराणा की उत्सुकता समाप्त नहीं हुई। साथ वालों ने भोपे पर दबाव बनाया तब भोपे ने विवश हो बे-मन से देवता का आह्वान किया। देवता ने जोर की हाक मारी। उनका गुस्सा इतना जबर्दस्त था कि उस हाक से देवरे का ऊपरी हिस्सा तड़क खा गया। इतने में जोर की बीजली प्रकट हुई और देखते-देखते भोपे का प्राणान्त हो गया।

इस पर महाराणा शंभुसिंह को बड़ा अफसोस और भैरूजी बावजी के जोश पर अचरज भी हुआ। ऐसी आकरी शक्ति को उन्होंने मन ही मन नमन किया और हाथोंहाथ देवरे के लिए एक सौ बीघा जमीन का पट्टा बख्शा।

लोकजीवन में अगणित देवी-देवता हैं। इनमें भैरू का संख्या सर्वाधिक है। बावन भैरू तो शास्त्रोक्त हैं ही परलोक में पदे-पदे भैरू का अस्तित्व मिलेगा। काला-गोरा भैरू तो सर्वाधिक लोकप्रियता प्राप्त हैं। मेवाड़ में ही भैरू के नाम, उनके रूप, उनके काम, उनके भोपे, मान्यता और स्थान ऐसे-ऐसे अजीबोगरीब मिलेंगे कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते। विवाह सूत्र में बंधने के बाद भैरू की जोड़े सहित पूजा बिना उनका गृहस्थ जीवन प्रारम्भ ही नहीं होता। और भैरू भी सड़क का कोई पत्थर लेकर सड़क पर ही सिन्दूर मालीपना का रूप दे स्थापित कर दिया जाता है।

कानोड़ में 1975 का सिरजण सामेळो

उदयपुर से 75 किलोमीटर दूर कानोड़ गांव में वहां के जवाहर जैन छात्रावास में 26-27 अक्टूबर 1975 को दो दिवसीय 'राजस्थानी सिरजण सामेलो' का आयोजन अब भी स्मृति में है।

उदयपुर के सम्प्रति संस्थान द्वारा उसका बुलावा किया गया। यह आयोजन बीकानेर की राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी तथा पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से हुआ।

इसका उद्घाटन करते उदयपुर क्षेत्र के विधायक शिवकिशोर सनाढ्य ने कहा कि सामाजिक एकता को बरकरार रखने के लिए वहां की भाषा एवं संस्कृति का योगदान उल्लेखनीय होता है और यह सृजन के द्वारा साहित्य में ही परिलक्षित होता है।

अकादमी के अध्यक्ष डॉ. शान्ति भारद्वाज 'राकेश' ने लोकभाषा, लोकशास्त्र को ही जनजीवन का मुख्य आधार बताया और सृजनधर्मियों को निरन्तर सृजनरत रहते हुए संस्कृति के संरक्षण की अन्तरधारा को प्रवाहमान करने का सन्देश दिया।

समारोह के मुख्य संयोजक के नाते डॉ. भानावत ने कहा कि समारोह में सौ विद्वानों का जुड़ाव एक उपलब्धि है। साहित्यकार अपनी आत्मा का दीपक कर अक्षर की बाती बना जो तपस्या-ज्योति विर्कीण करता है, उसी से मनुष्य का भेद मिटता है और पूरा विश्व एक कुटुम्ब का आदर्श धारण करने की सामर्थ्य पाता है।

स्वागताध्यक्ष छात्रालय के अधीक्षक सुन्दरलाल मुर्डिया ने कानोड़ को मेवाड़ की शिक्षा नगरी बताते कहा कि सन् 1940 में पं. उदय जैन ने मात्र तीन छात्रों से एक छोटा सा स्कूल चलाया जो जवाहर विद्यापीठ के रूप में दो-दो महाविद्यालयों को संचालित कर चार हजार छात्रों को विद्यादान दे रहा है। एक हजार बालक-बालिकाओं का तो यहां छात्रालय ही है।

इस अवसर पर कपासन के केशव पथिक, कानोड़ के विपिन जारोली तथा ऋषभदेव के ब्रजलाल भानावत का शॉल तथा कावड़ शैली की प्रशस्ति पट्टिका द्वारा सम्मान किया गया। संयोजन डॉ. ज्योतिपुंज ने किया।

संगोष्ठी में कुन्दन माली ने आधुनिक राजस्थानी साहित्य में मेवाड़ अंचल के योगदान पर पत्रवाचन किया। अध्यक्षता कमला अग्रवाल ने की। शंभुसिंह 'मधु' मुख्य अतिथि थे। इसमें डॉ. पूनम दईया, डॉ. महेन्द्र भानावत, डॉ. भगवतीलाल व्यास, प्रो. मथुराप्रसाद अग्रवाल, डॉ. शान्ति भारद्वाज, डॉ. पुरुषोत्तम छंगाणी, डॉ. जी. एस राठौड़ आदि ने भाग लिया। संचालन तेजसिंह तरूण ने किया।

रात्रि को काव्यनिशा की अध्यक्षता आकाशवाणी के केन्द्र निदेशक माणिक आर्य ने की। मुख्य अतिथि प्रो. देवकर्णसिंह राठौड़ थे। इसमें उपेन्द्र 'अणु', नन्दकिशोर 'निर्झर', भेरूसिंह राव, विजयलक्ष्मी, प्रदीप भट्ट, जर्नादन जलज, भविष्यदत्त भविष्य, शकुन्तला सोनी, मंजु माधवी, ज्योतिपुंज, डॉ. भगवतीलाल व्यास, डॉ. शान्ति भारद्वाज, डॉ. महेन्द्र भानावत, वृद्धिशंकर शिल्पी, चन्द्र गंधर्व, शीलव्रत शर्मा, राव अजातशत्रु, केशव पथिक, गोपालकृष्ण त्रिपाठी, श्रेणीदान चारण सहित 63 कवियों ने रचनापाठ किया।

संगोष्ठी के दूसरे सत्र में डूंगरपुर के रचनाकार शरदचन्द्र पण्ड्या ने आधुनिक राजस्थानी साहित्य में वागड़ अंचल के योगदान पर पत्रवाचन किया। अध्यक्षता डॉ. देव कोठारी ने की। मुख्य अतिथि डॉ. पुरुषोत्तम छांगाणी थे।

संगोष्ठी में डॉ. मथुराप्रसाद अग्रवाल, डॉ. सुन्दरलाल शर्मा, डॉ. देवेन्द्र भट्ट, भागवत कुन्दन, प्रो. कुन्दन माली आदि ने वैचारिक भूमिका निभाई। संयोजन उपेन्द्र 'अणु' ने किया।

राठौड़ चीफ डिजिटल ऑफिसर बने

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक लि. ने अंजनी राठौड़ को नया ग्रुप हेड - डिजिटल बैंकिंग बना चीफ डिजिटल ऑफिसर (सीडीओ) बनाया है। वे बैंक के डिजिटल परिवर्तन के सफर को अगले आयाम में ले जाने की जिम्मेदारी संभालेंगे। अंजनी के पास आईआईटी, खड़गपुर से बैचलर ऑफ टेक्नॉलॉजी इन एयरोस्पेस इंजीनियरिंग की डिग्री है तथा उन्होंने आईआईएम-कलकत्ता से पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन मैनेजमेंट किया है।

एचडीएफसी बैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर, आदित्य पुरी ने कहा कि उनके बेहतरीन क्रेडेंशियल्स एवं प्रमाणित नेतृत्वकारी क्षमताओं के चलते इस बात में कोई संदेह नहीं कि वे बैंक की वरिष्ठ नेतृत्वकारी टीम में शानदार भूमिका निभाएंगे। मुझे विश्वास है कि अंजनी के नेतृत्व में हम ग्राहकों को और बेहतर अनुभव प्रदान करेंगे। अंजनी ने कहा कि मैं भारत के अग्रणी प्राईवेट सेक्टर बैंक का हिस्सा बनकर उत्साहित हूँ। एचडीएफसी बैंक सदैव से डिजिटल स्पेस में सबसे आगे रहा है और मैं डिजिटल समाधानों के मामले में इसकी सीमाओं का और ज्यादा विस्तार करूंगा।

मुख कैंसर की जाँच का रिकॉर्ड बनाया

उदयपुर। पेसिफिक दन्त महाविद्यालय एवं चिकित्सालय, देबारी, वंडर सीमेंट लि., निंबाहेड़ा,

इंडियन डेंटल एसोसिएशन, उदयपुर ब्रांच एवं लाइफस्कैन हेल्थकेयर प्रा. लि., पुणे के संयुक्त तत्वावधान में विश्व कैंसर दिवस पर वंडर सीमेंट प्लांट प्रांगण में मुख कैंसर जाँच एवं जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। उदघाटन वंडर सीमेंट के अध्यक्ष एस. एम. जोशी तथा उपाध्यक्ष नितिन जैन ने किया।

मुख्य संयोजक डॉ. कैलाश असावा ने बताया कि कार्यक्रम के तहत एक दिन में एक ही जगह पर 3008 मरीज़ों की जाँच कर इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड में राष्ट्रीय स्तर पर रिकॉर्ड स्थापित किया गया। मुख्य समन्वयक डॉ. मृदुला टॉक एवं डॉ. जगदीश जड़के ने बताया कि मरीज़ों की जाँच एक विशेष उपकरण वेलस्कोप द्वारा की गई जो 2 मिनट के भीतर कैंसर में होने वाले शुरुवाती बदलावों को बता देती हैं। यह मशीन बिना किसी चीरफाड़ के कैंसर के सबसे शुरुआती लक्षणों को भाप लेता है।

इस कैंप में कुल 8 वेलस्कोप लाइफस्कैन हेल्थकेयर प्रा. लि. पुणे द्वारा प्रदान की गयी। कंपनी के नवनीत चौबे ने बताया कि इस नवीनतम तकनीक से मुख कैंसर रोक एवं इलाज के क्षेत्र में एक नया बदलाव आया है और यह तकनीक विश्व स्तर पर अपनाई जा रही है ।

समापन समारोह की मुख्य अतिथि, मराठी फ़िल्म एक्ट्रेस मीरा सारंग थीं। इंडिया बुक ऑफ़ रिकॉर्ड से बिश्वदीप चौधरी ने प्रमाण पत्र प्रदान किए। पेसिफिक दन्त महाविद्यालय के डॉ. सुरेश दशोरा, डॉ. संदीप जैन, डॉ. पुलकित चतुर्वेदी, डॉ. अनिरुद्ध हिंगे, डॉ. तुलिप चक्रवर्थी, डॉ. सागरिका ग्रोवर, डॉ. नुसरत रिज़वी सहित 70 दन्त चिकित्स्कों की टीम ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग दिया।

दिल के छेद का सफल ऑपरेशन

उदयपुर। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल सांइसेज

(पीआईएमएस), उमरड़ा में चिकित्सकों ने दस माह के शिशु के दिल के छेद का सफल ऑपरेशन किया है जो संभाग में इतनी कम उम्र के बच्चों का पहला मामला है।

पीआईएमएस के चैयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि जालोर, भीनमाल निवासी दस माह का शिशु जिसका वजन पांच किलो था उसे सांस लेने में तकलीफ थी। परिजनों ने शिशु को कई चिकित्सालयों में दिखाया, लेकिन इतनी कम उम्र के शिशु का ऑपरेशन करने को कोई चिकित्सालय तैयार नहीं था। गत दिनों परिजन शिशु को पीआईएमएस में लेकर आए। यहां जांचें करने पर पता चला कि शिशु के दिल में छेद है। इस पर पीआईएमएस के कॉर्डियोलॉजी विभाग के डायरेक्टर डॉ. अमित खंडेलवाल एवं उनकी टीम ने बिना चीरा लगाये बटन (डिवाइस) लगाकर छेद को बंद कर दिया। शिशु अब पूरी तरह से स्वस्थ है।

47 दिव्यांग एवं निर्धन जोड़े बने हमसफर

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान के लियो का गुड़ा स्थित सेवामहातीर्थ परिसर में 9 फरवरी को दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह आयोजित किया गया। इसमें 47 जोड़े एक-दूसरे के हमसफर बने।

संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश 'मानव' सह सस्थापिका कमलादेवी, अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल, वंदना अग्रवाल ने दीप प्रज्वलन कर विवाह महोत्सव का शुभारम्भ किया। विशिष्ट अतिथि स्पेन से मोनिका देवी, लंदन से कमलादेवी, मुम्बासा से कुंवर भाई, उड़ीसा से आनंद कुमार, दिल्ली से कुसुम गुप्ता दिल्ली थे। कैलाश मानव ने कहा कि जिन दिव्यांगों और गरीबों ने जीवन को दुर्भाग्य ही मान लिया था उनकी उमंगों को पंख देकर उनकी गृहस्थी बसाने का यह काम संस्थान पिछले 16 वर्षों से कर रहा है। अब तक करीब 2000 दिव्यांग एव निर्धन जोड़ों की गृहस्थी बसाई जा चुकी है। आज वे सभी सुखी हैं और उनके आगन में किलकारियां गूंज रही हैं।

संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने डॉक्युमेन्ट्री फिल्म के माध्यम से संस्थान की 34 वर्षीय नि:शुल्क सेवायात्रा से लोगों को रूबरू करवाया। उन्होंने बताया कि संस्थान हर वर्ष दो बार सामूहिक विवाह आयोजित करता है।

प्रात: शुभ मुहूर्त में तोरण की रस्म निभाई गई। सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में वर-वधूओं ने हाइड्रोलिक स्टेज पर एक दूसरे के गले में वरमाला डाली तो पांडाल तालियों से गूंज उठा। नवयुगलों को संस्थान एवं विभिन्न राज्यों से आए अतिथियों ने गृहस्थी बसाने का जरूरी सामान प्रदान किया। सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक मानधाता सिंह ने राज्य सरकार की ओर से प्रत्येक जोड़े को आर्थिक सहायता के चेक प्रदान किए । समारोह में 50 दिव्यांगों को नि:शुल्क कृत्रिम अंग व सहायक उपकरण वितरित किए गए। विवाह सम्पन्न होने के बाद नवयुगलों को सभी अतिथियों ने सफल गृहस्थी के लिए आशीर्वाद देते हुए नम आखों से विदाई दी।

मात्र 11 मिनिट में एन्जियोप्लास्टी कर बचाई मरीज की जान

उदयपुर। हार्ट अटैक में सामान्यत 3 धमनियों में से काई एक धमनी में ब्लॉकेज आकर बंद होती है लेकिन ह्रदय की मुख्य कोरोनरी आर्टरी (लैफ्ट मैन) का बंद होकर हार्ट अटैक आना बहुत ही दुर्लभ है। ऐसे मरीज हार्ट अटैक के समय ही मर जाते हैं। वे अस्पताल तक भी नहीं पहुंच पाते हैं। ऐसा ही मामला गत दिनों उदयपुर के पारस जे. के. हॉस्पिटल में देखने को मिला जहां नाथद्वारा निवासी विजेन्द्र गुर्जर की मात्र 11 मिनिट में एन्जियोप्लास्टी कर जान बचाई गई।

हॉस्पिटल के ह्रदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सी. पी. पुरोहित ने बताया कि 60 वर्षीय विजेन्द्र गुर्जर अस्पताल के आपातकालीन विभाग में जबरदस्त हार्ट अटैक के साथ आया और अस्पताल के मुख्य गेट पर ही गिर गया। इस परिस्थिति में मरीज को इमरजेंसी में तुरंत ही सी.पी.आर कर उसको पुनर्जीवित किया। इसके बाद मरीज की तुरंत ही एन्जियोग्राफी की गई जिसमें पता चला कि उसकी बॉयी मुख्य धमनी में 100 प्रतिशत रुकावट है। इस प्रकार की स्थिति को चिकित्सकीय भाषा में एक्यूट लैफ्ट मैन कोरोनरी ऑक्लूजन कहते हैं। इसमें मरीज को तुरंत ही उपचार की आवश्यकता होती है। ऐसा नहीं करने पर मरीज की मृत्यु हो जाती है।

डॉ. पुरोहित ने बताया कि मेडिकल जनरल्स के मुताबिक विश्व में आज तक ऐसे मामलों में मात्र 5 ही मरीज हैं जो बच पाये हैं। ऐसे मामलों में समय का बहुत बड़ा योगदान है। इसमें हमने बिना समय गवायें इमरजेंसी में मरीज का उपचार किया और उसका जीवन बचाया। मरीज अब स्वस्थ है और उसे अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया है।

अस्पताल के डायरेक्टर विश्वजीत ने बताया कि इस मामले में डॉ. सी.पी. पुरोहित, डॉ. हरीष सनाढ्य, डॉ. नीतिन कौशिक एवं डॉ. चेतन क्रिटिकल बधाई के पात्र हैं जिन्होंने इस ऑपरेशन को सफल बनाया।

चिक ईजी ने उदयपुर के बाजार में उतारे दमकते हेयर कलर

उदयपुर। केविनकेयर का नया और बेहतर 'चिक ईजी' उदयपुर के उपभोक्ताओं के लिए ब्लैक, ब्राउन और बरगंडी रंगों में अनूठे हेयर कलर लाया है।

इसमें आंवला, हिना, जपाकुसुम, मेथी और भृंगराज भी है। चिक ईजी में अमोनिया नहीं है। चिक ईजी बाल रंगने का सबसे आसान साधन है। दस्ताने पहनकर सैशे की सामग्री मिलाइए, शेम्पू जैसी आसानी से बालों में लगाइए, अच्छी तरह मालिश कीजिए और 10 मिनट बाद बाल धो लीजिए। सुविधाजनक और किफायती चिक ईजी केवल 15 रुपये में आपको लुभाने वाला और आकर्षक रूप देता है। शानदार रंगत वाला नया और बेहतर चिक ईजी अब नैचुरल ब्लैक, डार्क ब्राउन और बरगंडी रंगों में उपलब्ध है।

आकर्षण फॉर एवरमार्क डायमंड की पेशकश

उदयपुर। सेलेब्रिटीज़ के पसंदीदा फॉर एवरमार्क डायमंड्स ने दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण रेड कार्पेट्स को थाम लिया है। प्राकृतिक स्त्रोतों से प्राप्त डायमंड इस साल खास आकर्षण का केंद्र बनने के लिए तैयार हैं, क्योंकि डीपी ज्वेलर्स ने फॉरएवरमार्क डायमंड ज्वेलरी को विशेष रूप से 92वें वार्षिक एकेडमी अवार्ड्स के लिए डिज़ाइन किया है।

हॉलीवुड की अग्रणी महिलाओं की प्रतिभा और उनके आकर्षण से प्रेरणा लेते हुए, विशेषज्ञता के साथ तैयार किए गए डिजाइन सेलिब्रिटी स्टाइलिस्टों के निजी अवलोकन और चयन के लिए लॉस एंजिल्स में फॉरएवरमार्क ऑस्कर सुइट में प्रदर्शित किये जायेंगे। क्लासिक जियोमेट्रिक पैटर्न और प्रकृति-प्रेरित रुझानों से प्रेरणा लेते हुए, डीपी ज्वेलर्स ने झूमर-झुमके की एक आकर्षक जोड़ी तैयार की है, जो अंडाकार हुप्स की तीन परतों के साथ-साथ लंबे फर्न-प्रेरित पत्ते से खूबसूरती से ब्लेंकड करता है, जो केंद्र में हुप्स से होकर गुजरता है। व्हाइट गोल्ड, रोज गोल्ड और खूबसूरत फॉरएवरमार्क डायमंड में बनाई गई, इस जोड़ी ने क्लासिक ट्रेंड को फिर से लोकप्रिय बना दिया है।

प्रदर्शित किये गये विशेष रूप से तैयार ज्वेलरी में फॉरएवरमार्क डायमंड जड़े होंगे, जिनमें से सभी प्रकृति का अद्वितीय और अनमोल उपहार हैं। असली, प्राकृतिक और अनट्रीटेड डायमंड का चयन करने के लिए फॉरएवरमार्क मानक 4सी से आगे देखता है।

विश्व की श्रेष्ठतम.....

(पृष्ठ एक का शेष)

सभा में बैठे सूरजनारायण ने दूर से ही जब अपनी मां को आते देखा तो वे बिना जूते पहने ही जा पहुंचे और चरण छूकर पूछने लगे- आज यहां कैसे पधारना हुआ? मां बोली- तुमने मेरे साथ छल किया। तुम्हारे बिना सारी रात तड़फती रही। मुझे नींद नहीं आई। अब मैं क्या कहूं। मैं जैसी तड़फती रही तू भी वैसा ही बलता-जलता रहना। सूरजनारायण बोले- मां ऐसी बात मत कहो। नहीं तो सारी दुनिया जलकर खाक हो जायेगी।

अपना श्राप वापिस ले लो। मां बोली- श्राप तो वापिस नहीं लिया जा सकता। लेने से आता भी नहीं। अब तो यही है कि जैसे मैं रात भर जलती रही, तुम भी ऐसे ही बलते-जलते रहना। रात भर जैसा मेरी आंखों से पानी झरता रहा, वैसे तुम भी झरते रहना और जैसे मैं रात भर ठरती-ठिठुरती रही, वैसे तू भी ठरते-ठिठुरते रहना। कहते हैं इसी श्राप के कारण ग्रीष्म, वर्षा और सर्दी नामक ऋतुएं प्रारंभ हुई।

पाठक स्वयं निर्णय करें कि क्या इस लोककथा में विश्व-मानव से संदर्भित जीवन-शक्ति का जुड़ाव है? उस छात्रा को इस कथा में निहित किन भावों अथवा तत्वों ने सर्वाधिक रूप से प्रभावित किया? क्या आप भी इसे श्रेष्ठ लोककथा मानते हैं?

रासलीला में राम-सीता.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

नारद, ब्रह्मा, साधु, रावण भगवा कपड़े में नहीं होते। रावण मुखैटा नहीं लगाकर मेवाड़ी तनी बंटदार मूछ में, पगड़ी बांधे, लम्बा झग्गा पहने होता है।

इन विशेषताओं के साथ रासधारी ख्याल की रंगभूमि भी वैशिष्ट्य लिए होती है। गोलाकार मंच होने से न केवल दर्शक मकान की छतों, चबूतरों, पेड़ों तथा ऊं ची-नीची दीवालों पर बैठ सकते हैं, पात्र भी चारों ओर मुखातिब होते हुए अपना खेल करते हैं।

उन्हें चारों दिशाओं में, सबके लिए, घूमना होता है। संवाद को भी बार-बार पुनरावृत्ति देनी होती है। इस कारण स्थिर लंकापुरी भी घूमती रहती है। स्थल वही हाने से कभी वह पंचवटी तो कभी चित्रकूट भी बन जाता है। सीता की कुटिया बार-बार जगह बदलती है। वही युद्धक्षेत्र भी बन जाता है।

दर्शकों के चारों ओर बैठने से राम को धनुष भी बार-बार, सब ओर मुखाबित हो तोड़ना पड़ता है। रावण को भी अपनी जगह बदल-बदल कर कई बार धराशायी होना पड़ता है। वनगमन के समय रामादि को मंच के ही नहीं, दर्शकों के भी बार-बार चक्कर काटने पड़ते हैं। साजिंदे भी दर्शकों के बीच बैठ जाते हैं।

गाते वक्त उनके साथ दर्शक भी गाने लग जाते हैं। छिपकर आने वाला पात्र ओढ़कर दर्शकों के बीच बैठ जाता है और मंच पर खुल पड़ता है। ऐसे ही राम को बार-बार लंबे समय तक विलाप करना पड़ता है। इसे क्या कहा जाए कि जिस रासधारी ख्याल का मैंने चालीस-पैंतालीस वर्ष पूर्व अध्ययन किया और प्रदर्शन देखे, उसे उसके बाद मैं वैसे जोश-होश एवं उदात्त रूप में नहीं देख सका और अब तो बड़े बूढ़ों में केवल उसका नाम तथा धुंधली स्मृतियां भर रह गई हैं।

ऐसी दशा रासधारी की ही नहीं हुई, मेवाड़ के रावलों में प्रचलित ख्यालों की भी हो गई। भवाइयों में प्रचलित खेलतमाशे भी वैसे नहीं रहे। तुर्राकलंगी ख्यालों का वह दौर भी जाता रहा। मेवाड़ी ख्यालों की रंगतें भी हवा के साथ हवा हो गई। बचा तो केवल आदिवासी भीलों का गवरी ख्याल बचा है जिसकी तनिक भी संभावना नहीं थी कि वह अच्छे रूप में और अधिक उत्साह लिए दर्शनीय रहेगा। मेरा शोधप्रबंध भी इसी पर केन्द्रित था तब आदिवासी पंचों ने ऐसे परचे निकाले कि कोई गवरी नहीं खेलेगा।

यह पिछड़े होने की निशानी है और जो खेलेगा, उसे जाति से बहिष्कृत कर दिया जाएगा। नई दिल्ली के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा 12 से 16 मार्च 2008 को आयोजित रामकथा अंकन मंचन वाचन के अंतर्राष्ट्रीय वर्कशॉप में प्रेम मटियानी ने कुमाऊं की रामकथा के संदर्भ में जब कुछ स्थल गाकर सुनाये तब मैंने कहा कि ये सारी राग-रागिनियां मेवाड़ की रासधारी में हू-ब-हू गाई जाती हैं जो वहां के कुमावत मंचन के अवसर पर गाते हैं।

यह निश्चय लगता है कि मेवाड़ के कुमावत घूमते-घामते कुमाऊं पहुंच गए और वहां इस विधा को मंचित कर जीवित रखा। मैंने यह भी कहा कि कुमाऊं नाम ही कुमावत जाति के कारण पड़ा हो तो कोई आश्चर्य नहीं किन्तु यह गहरी खोज का विषय है।

रासधारी की तुलना मेवाड़ के अन्य किसी ख्याल से यदि की जाय तो वह गवरी ही है। गवरी की रंगभूमि और पात्रों द्वारा भरपूर मनोरंजन का पक्ष भी रासधारी जैसा ही है। देश की आजादी के बाद यह भलीभांति लगने लग गया था कि आनेवाले समय में हमारी जो पारंपरिक कला-संस्कृति थाती की समृद्ध विरासत है वह या तो परिवर्तित हो जायेगी या फिर उसके दर्शन ही दुर्लभ हो जायेंगे। रासधारी ख्याल के साथ भी यही अफसोस है कि तीन सौ वर्ष से चली आ रही जिस ख्याल परंपरा ने राम के लोकादर्श से मेवाडी जनजीवन को प्रेम-रस रंग दिया, अब उसकी कल्पना भी किरकिरी ही दे रही है।

निसान एसयूवी की दूसरी झलक जारी

उदयपुर। निसान इंडिया ने भारतीय बाजार के लिए अपनी पहली कॉम्पैक्ट बी-एसयूवी का दूसरा टीजर पेश किया जो की 2020-21 की पहली छमाही में लॉन्च की जाएगी। निसान अपनी पहली मेड फॉर इंडिया कॉम्पैक्ट एसयूवी 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' के सिद्धांत पर लॉन्च करेगी।

निसान की वैश्विक एसयूवी विरासत और उन्नत तकनीक पर आधारित नई कॉम्पैक्ट एसयूवी को भविष्य की यात्रा के हिसाब से स्टाइलिश डिजाइन के साथ सुविधा संपन्न प्रीमियम पेशकश के रूप में बनाया गया है जिससे यह गाड़ी सड़क पर अपनी मजबूत और सक्रिय उपस्थिति दर्ज़ कराए। निसान की नई एसयूवी में निसान इंटेलिजेंट मोबिलिटी के एक हिस्से के रूप में बिल्कुल नई तकनीक का इस्तेमाल हुआ है। यह एसयूवी कंपनी के इस दृष्टिकोण को दर्शाती है कि वाहनों को कैसे संचालित और समाज के साथ एकीकृत किया जाता है। यह कॉम्पैक्ट एसयूवी निसान ग्लोबल एसयूवी डीएनए के लगातार नई खोज करने के स्वभाव और जापानी इंजीनियरिंग की गवाही देती है, जिससे निसान के प्रतिष्ठित मॉडल जैसे कि पैट्रोल, पाथफाइंडर, अर्माडा, एक्स-ट्रेल, जूक, कशकाई और किक्स पर निर्माण हुआ है।

सहारा के साथ दो बड़े निवेशक जुड़े

उदयपुर। संकट में फंसे सहारा समूह को उम्मीद है कि वर्ष 2020 उसके लिये राहत भरा होगा और उसकी तमाम परेशानियां दूर हो जायेंगी। समूह के प्रमुख सुब्रत रॉय ने भरोसा जताया है कि समूह की सभी समस्याएं इस साल सुलझ जाएंगी। रॉय ने कहा कि समूह के रीयल एस्टेट और शहर विकास कारोबार में दो बड़े विदेशी निवेशकों को साथ जोड़ा गया है। इसके साथ ही भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के पास जो 22,000 करोड़ रुपये जमा कराए गए हैं वे भी अंततः वापस आ जायेंगे।

रॉय ने सहारा के सभी निवेशकों को भी भरोसा दिलाया है कि उन्हें उनका निवेश पूरे ब्याज के साथ मिलेगा और एक दिन का विलंब होने पर भी उन्हें अतिरिक्त ब्याज दिया जाएगा। समूह के 42वें स्थापना दिवस पर निवेशकों को लिखे पत्र में रॉय ने कहा कि समूह ने हमेशा समय पर भुगतान और सेवाओं में विशिष्टता की अपनी परंपरा को कायम रखा है। कुछ अवांछित परिस्थितियों की वजह से पिछले कुछ साल के दौरान कुछ स्थानों पर भुगतान में देरी हुई है।

पूंजी बाजार नियामक सेबी के साथ समूह की दो कंपनियों द्वारा बांड जारी कर जुटाए गए कोष मामले में नियमन संबंधी विवाद पर रॉय ने कहा कि उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी 'एम्बागरे' की वजह से संपत्तियों की बिक्री या उसे गिरवी रखकर जुटाई गई समूची राशि को सेबी-सहारा खाते में जमा कराया गया है।

लैंड रोवर 'डिस्कवरी स्पोर्ट' लॉन्च

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने वर्ष 2020 के नए मॉडल डिस्कवरी स्पोर्ट के लॉन्चिंग की घोषणा की। यह ज्यादा सहज, ज्यादा व्यावहारिक और आधुनिक एसयूवी है। एस और आर डायनेमिक एसई वर्जन में उपलब्ध नई एसयूवी डिस्कवरी स्पोर्ट में बीएस-6 अनुकूल 183 किलोवॉट का इंजीनियम टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल इंजन और 132 किलो वॉट का इंजीनियम टर्बोचार्ज्ड डीजल पावरट्रेन इंजन लगा है।

जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. (जेएलआरआईएल) के प्रेसिडेंट और प्रबंध निदेशक रोहित सूरी ने कहा कि नई डिस्कवरी स्पोर्ट में इसके मूल डिजाइन का बोल्ड रूप है, जिसमें नवीनतम तकनीक शामिल की गई है। रोमांच की भावना को हवा देते हुए इस वाहन में कई सुधारे गए फीचर्स शामिल किए, जिससे न केवल वाहन की क्षमता बढ़ेगी, बल्कि गाड़ी को ड्राइव करने का रोमांच और अहसास और बढ़ जाएगा। नई एसयूवी में इसके शानदार डिजाइन को और सुधारा गया है। इसके साथ इसमें कई अलग-अलग फीचर्स जोड़े गए हैं, जिससे डिस्कवरी स्पोर्ट लैंड रोवर पोर्टफोलियो में प्रमुख मॉडल्स में एक बन गई है। एसयूवी की बॉडी का निर्माण समान अनुपात में किया गया है। डिस्कवरी स्पोर्ट को नई प्रीमियम एलईडी हेडलाइट्स, डे टाइम रनिंग लाइट्स और कार के पिछले भाग में एलईडी लाइट्स से एसयूवी की खबसूरती में चार चांद लगाए गए हैं। एसयूवी के बाहरी डिजाइन की खूबसूरती की झलक केबिन में भी नजर आती है।

डॉ. महेन्द्र भानावत का महत्वपूर्ण साहित्य

डॉ. महेन्द्र भानावत की 100 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनमें से कुछ तो अप्राप्य हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित अभिनंदन ग्रंथ 'लोक मनस्वी' प्रकाशन प्रक्रिया में है। उनकी लिखित कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें इस प्रकार हैं-

पुस्तक का नाम	मूल्य
भारतीय लोकनाट्य	1500/
परंपरा का लोक	475/
आदिवासी लोक	350/
जनजाति जीवन और संस्कृति	295/
महाराष्ट्र के लोकनृत्य	200/
आदिवासी जीवनधारा	395/
जनजातियों के धार्मिक सरोकार	150/
राजस्थान के लोकनृत्य	200/
गुजरात के लोकनृत्य	200/
राजस्थान के लोक देवी देवता	150/
भारतीय लोकमाध्यम	75/
अजूबा भारत	200/
पाबूजी की पड़	50/
लोककलाओं का आजादीकरण	250/
उदयपुर के आदिवासी	250/
निर्भय मीरां	250/
रंग रूड़ो राजस्थान	100/
कुंवारे देश के आदिवासी	100/
जन्हें मैं जानता हूं	100/
जैन लोक का पारदर्शी मन	150/
गवरी	60/
राजस्थान के थापे	150/
कठपुतली	60/
जनजातियों में गाथा गायकी	350/

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

वेदांता उदयपुर वर्ल्ड म्युजिक फेस्टिवल का शानदार आयोजन

भारत सहित स्पेन, फ्रांस, कुर्दिस्तान, अफ्रीका, पुर्तगाल, इरान, माली, रूस, स्विटजरलैण्ड के 150 से अधिक कलाकारों का जुड़ाव

7,8,9 फरवरी को 'हम विश्व हैं: अनेकता में एकता' की थीम रही

- डॉ. तुक्तक भानावत-

उदयपुर। भारत के सबसे बड़े विश्व संगीत महोत्सव 'वेदांता उदयपुर वर्ल्ड म्युजिक फेस्टिवल' के 5वें संस्करण का आयोजन 7, 8, तथा 9 फरवरी को उदयपुर में किया गया। शुभारंभ भारत की सुधा रघुरमन और फ्रांस के जेफरी एमपोंडो द्वारा महात्मा गांधी और मार्टिन लूथर किंग को दी गई हृदयस्पर्शी श्रृद्धांजलि से हुई। यह फेस्टिवल 'मांजी का घाट' (अम्बराई घाट), फतहसागर पाल और गांधी ग्राउंड पर रखा गया।

पहले दिन पंजाबी लोक रैप और हिप-हॉप गायिका गिन्नी माही, स्विस रॉक बैण्ड श्नेलरटोलरमीयर, भारतीय बैण्ड 'व्हेन चाय मेट टोस्ट' के नियो-फोक और फ्रेंच ग्रुप नो जैज़ के इलेक्ट्रो-जैज़ की दमदार प्रस्तुतियाँ हुईं। इस महोत्सव में भारत के अलावा फ्रांस, स्पेन, अफ्रीका, इरान, पुर्तगाल, कुर्दिस्तान, माली, रूस, स्विटजरलैण्ड आदि देशों के संगीतकारों ने शिरकत की। हर वर्ष लगभग 50,000 लोगों की उपस्थिति में विश्वभर की संगीत-धाराओं का एकीकरण लिए इसकी शोभा एवं सुन्दरता बेजोड़ कही जाती है।

सहर इंडिया के संस्थापक निदेशक संजीव भार्गव ने यह ठीक ही कहा कि यह महोत्सव केवल चार वर्षों में एशिया के सबसे बड़े उत्सवों में एक बन गया है। एक छत के नीचे संगीत की विभिन्न शैलियों की पेशकश दुर्लभ संगीतकारों का लाइनअप है। भारत में तो ऐसा नजारा न कभी देखा गया और न कभी सुना गया। इस वर्ष के सबसे प्रतिष्ठित कलाकार हबीब कोइटे (अफ्रीका), नो जैज़ (फ्रांस), गिन्नी माही, अंकुर तिवारी और थाइक्कुडम ब्रिज (भारत) थे।

दूसरे दिन मांजी के घाट पर मशहूर कार्नेटिक म्यूजिक सिंगर सुधा रघुरमन ने आदि गुरु शंकराचार्य द्वारा राग जोग, तोड़ी, दुर्गा और सिंधु भैरवी में भोर राग 'गुरु अष्टकम' प्रस्तुत किया। तबस्सैन एवं छबरेल रूहाना ड्युएट ने इरान और लेबनान का मिलाजुला संगीत प्रस्तुत किया। 'औद' अरैबिक वाद्ययंत्र और सितार के साथ सूफी कवि आमिर खुसरू तथा 13वीं सदी के पर्सियन कवि मौलाना रूमी की कविताओं का पाठ किया। इसे लोगों ने खूब पसंद किया।

फतहसागर पर दोपहर के सत्र की शुरुआत 'आउट ऑफ द बॉक्सच : जेल यूनिवर्सिटी' द्वारा गाये गये सूफी गानों से हुई। बैंड की शुरुआत वैश्विक प्रार्थना 'असतोमासदगमया' के साथ हुई। उन्होंने 56 साल पुराने राजस्थानी गाने और 'दिल राजी मेरो यार ओ फकीरी में' और 'दम मस्त कलंदर' की प्रस्तुति से श्रोताओं की जमकर वाहवाही लूटी। 'सारा कोरेईया' ने

फैडो पर पारंपरिक पुर्तगाली संगीत की प्रस्तुति द्वारा प्रेम, पीड़ा, जुदाई, जिंदगी की बेहतरीन प्रस्तुति दी। दोपहर के सत्र की अंतिम प्रस्तुति बॉलीवुड के मशहूर सिंगर अंकुर तिवारी की रही। उनके लोकप्रिय सबसे पीछे हम खड़े कंपोजिशन के साथ फोक रॉक और रॉक एन रोल म्युजिक को बड़ी सराहना मिली।

शाम को गांधी ग्रांउड में मामे खान ने राजस्थानी लोकसंगीत से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। माली के हबीब कोइटे ने वेस्ट अफ्रीकी फोक ब्लूज को प्रस्तुत किया और भारतीय बैंड थाइक्कुडिम ब्रिज ने भारतीय पॉप एवं रॉक म्यूजिक की प्रस्तुति दी। उन्होंने अपने डेब्यून एलबम 'नवरसम' और अपने नए एलबम 'नमह' के गीत गाये।

अंतिम दिन माजी का घाट पर सुबह फेस्टिवल की शुरुआत शास्त्रीय गायक रवि जोशी ने भक्ति संगीत प्रस्तुत कर की। उन्होंने बिलासखानी तोड़ी और मियांजी की तोड़ी में रचनाएं प्रस्तुत कीं। ये राग बादशाह अकबर के दरबारी संगीतज्ञ मियाँ तानसेन के पुत्र बिलसखान द्वारा बनाए गए हैं जो करुणा के मूड को दर्शाते हैं। रवि ने राग बहार वसंत का स्वागत करते हुए हर्षित मनोदशा को दर्शाया। कुमार गंधर्व के निर्गुण भजन द्वारा अपने गायन का समापन किया।

मिको केंडीस ने कुर्दिस्तान क्षेत्र का संगीत प्रस्तुत किया। इसमें कुर्द लोगों की कहानी, गीत, महाकाव्य और पौराणिक कथा थी। उन्होंने वाद्ययंत्र लूट को फ्रांस्वा क्लेव के साथ बजाया। दोपहर को फतहसागर पाल पर कार्यक्रम की शुरूआत पक्षी ने हिंदी पॉप फ्यूजन से की। उन्होंने मलयालम और हिन्दी मिक्स गीत प्रस्तुत किये। उन्होंने 'पग मे बांधे घुंघरू', 'क्यों तू न बोले खुद से', 'जोगी' तथा 'बलमा' गीत प्रस्तुत कर दर्शकों की खूब वाहवाही लूटी।

रूस के 'सत्तूमा' ने रूस का फोक करेलियन संगीत प्रस्तुत किया। फ़िनिश भाषा में फिनलैंड के गाने 'कंट्री गाए' और 'यस ऑफ़ कोर्स' गाते हुए श्रोताओं को आकर्षित किया। अंतिम प्रस्तुति अरुणाचली म्युजिकल प्रिंस तबा चाके द्वारा हुई। ताबा ने 'इन वादियों', 'मॉर्निंग सन', 'मेरी दास्तान' और 'दिस इज़ द डे' जैसे खूबसूरत गीत प्रस्तुत किये।

शाम को गांधी ग्राउंड पर नई दिल्ली के अदवैता ने अपने बैंड के साथ इंडी फ्यूजन, 'मोरा सैयां मोसे बोले ना' और 'छनन छनन बाजे' गीत प्रस्तुत किये। बॉलीवुड पार्श्व गायक, गीतकार, संगीतकार निकिता गाँधी ने बॉलीवुड गीत प्रस्तुत किये। फेस्टिवल का समापन स्पेन के ओक्स ग्रासेस की स्पेनीश पॉप पर प्रस्तुति के साथ हुआ।

तीन दिवसीय फेस्टिवल के 5वें संस्करण की थीम 'हम विश्व हैं : अनेकता में एकता' रखी गई। इसमें भारत सहित स्पेन, फ्रांस, कुर्दिस्तान, पुर्तगाल, माली, अफ्रीका, इरान, रूस, स्विट्जरलैंड देशों के 150 वैश्विक कलाकारों ने शिरकत की। केरल, अबू धाबी, दिल्ली, मध्यप्रदेश, गुजरात और मुंबई के दर्शकों ने फेस्टिवल का जमकर लुत्फ उठाया।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।